एक ऑंकार सतिगुरू प्रसादि
धुर द पैगाम
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
हक
हक
तप्यं: तप्यौ
जप्यौ जप्यं:
मेरे
साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
तूं मेरा पिता तूहै मेरा माता । तूं मेरा बंधप तूं मेरा भ्राता । तूं मेरा
राखा सभनी थाई - ता भउ केहा काड़ा जीउ । मै अंधुले की टेक -
तेरा नाम खुंदकारा । मै गरीब मै मसकीन - तेरा नाम है अधारा ।
www.9009.co.in

"मेरा अपना"

प्रिय मित्र - संबंधी.....!?

1. तूं मेरा पिता तूहै मेरा माता । तूं मेरा बंधप तूं मेरा भ्राता ।

तूं मेरा राखा सभनी थाई - ता भउ केहा काड़ा जीउ ।

अर्थः- तू ही मेरा पिता है, तू ही मेरी माता है । तू ही मेरा सम्बन्धी है और तू मेरा भाई है । जब तू सब स्थानों पर मेरा रक्षक है, तब मुझे किसी का भय और दुःख कैसे होगा ?

तुम्हरी क्रिपा ते तुध पछाणा । तूं मेरी ओट तूहै मेरा माणा । तुझ बिन दूजा अवर न कोई - सभ तेरा खेल अखाड़ा जीउ ।

अर्थः- तेरी कृपा से ही मैंने तुझे पहचाना है, इसलिए तू ही मेरी ओट है और तू ही मेरा मान है । तुझसे अलग कोई दूसरा नहीं है, यह सम्पूर्ण जगत तेरा खेलने का अखाड़ा है ।

जीअ जंत सभ तुध उपाए । जित-जित भाणा तित-तित लाए । सभ किछ कीता तेरा होवै - नाही किछ असाड़ा जीउ ।

अर्थः- जीव और जन्तुओं सब तूने उत्पन्न किए हैं । जिस-जिस कार्य में जीवों को तूने लगाना चाहा है-उसी-उसी में लगाए हैं । सब कुछ तेरा किया हुआ है । हमारा किया कुछ नहीं है ।

नाम धिआइ महा सुख पाइआ । हरि गुण गाइ मेरा मन सीतलाइआ । गुर पूरै वजी वाधाई - नानक जिता बिखाड़ा जीउ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 103)

अर्थः- तेरे नाम को स्मरण कर मैंने महा सुख पाया है । हे हरि ! तेरे गुण गाकर मेरा मन शीतल हो गया है । हे नानक ! पूर्ण गुरु द्वारा प्रसन्नता प्रकट हुई है, अर्थात् आत्मानन्द की प्राप्ति हुई है और जिससे संसार-रूपी विषम अखाड़ा जीत लिया है ।

a. हरि जी माता - हरि जी पिता - हरि जीउ प्रतिपालक । हरि जी मेरी सार करे - हम हरि के बालक ।

अर्थ:- हरि ही सबका माता, पिता और पोषक है । परमात्मा स्वयं मेरी रक्षा करता है, मैं उसका बालक हूँ ।

सहजे सहज खिलाइदा - नही करदा आलक । अउगण को न चितारदा - गल सेती लाइक ।

अर्थ:- सहज में ही वह आनन्द देता है, कभी आलस्य नहीं करता । वह मेरे अवगुणों की उपेक्षा करके मुझे गले से लगाता है ।

मुह मंगां सोई देवदा - हरि पिता सुखदाइक । गिआन रास नाम धन सउपिओन - इस सउदे लाइक ।

अर्थ:- मेरा सुखदायी परमात्मा-पिता मुझे वह सब कुछ देता है, जो मैं मुँह से माँगता हूँ । मुझे उसने हरि-नाम-धन का व्यापार करने योग्य बना दिया है ।

साझी गुर नाल बहालिआ - सरब सुख पाइक । मै नालह कदे न विछुड़ै - हरि पिता सभना गला लाइक । (1101)

अर्थ:- परमात्मा ने मुझे गुरु के साथ साझे में कर्मशील किया है, जिससे सब सुख मेरी चाकरी भरते हैं । हरि-पिता सब बातों में समर्थ है; (मेरी प्रार्थना है कि) वह मुझसे कभी दूर न हो (मुझे विरह-दुःख न भोगना पड़े) ।

6. दीनन की प्रतिपाल करै नित - संत उबार गनीमन गारै ।

अर्थ:- वे सदैव दीनों का पालन करते हैं, संतों की रक्षा करते हैं और शत्रुओं का नाश करते हैं । (दसम ग्रंथ - 37)

पछ पसू नग नाग नराधप - सरब समै सभ को प्रतिपारै ।

अर्थः- वह हर समय सभी को धारण करता है , पशु , पक्षी , पर्वत (या वृक्ष), सर्प तथा मनुष्य (मनुष्यों के राजा) ।

पोखत है जल मै थल मै पल मै - कल के नहीं करम बिचारै।

अर्थः- वे जल तथा स्थल में रहने वाले समस्त प्राणियों का क्षण भर में पालन करते हैं तथा उनके कर्मों पर विचार नहीं करते ।

दीन दइआल दइआ निध - दोखन देखत है पर देत न हारै ।

अर्थः- दयालु प्रभु दीनों का स्वामी और दया का भण्डार उनके दोषों को देखता है, किन्तु अपनी कृपा से कभी नहीं चूकता ।

2. मै अंधुले की टेक - तेरा नाम खुंदकारा । मै गरीब मै मसकीन - तेरा नाम है अधारा ।

अर्थः- हे मेरे बादशाह ! तुम्हारा नाम ही मुझ अन्धे की लकड़ी है, आश्रय हैं; मैं निर्धन हूँ और तुच्छ हूँ, तुम्हारा नाम ही मेरा सहारा है ।

करीमां रहीमां अलाह तू गनीं । हाजरा हजूर दर पेस तूं मनीं ।

अर्थः- हे अल्लाह, करीम, रहीम ! तुम ही अमीर हो, तुम प्रति पल मेरे सामने हो (अब मुझे किसी और की ज़रूरत नहीं) ।

दरीआउ तू दिहंद तू - बिसीआर तू धनी । देह लेह एक तूं - दिगर को नही ।

अर्थः- तुम दया के स्रोत हो, दाता हो, अत्यन्त धनिक हो। एक तुम ही जीवों को पदार्थ देते हो, तुम्हीं लेते हो। कोई दूसरा ऐसा नहीं (जो यह सामर्थ्य रखता हो)।

तूं दानां तूं बीनां - मै बीचार किआ करी। नामे चे सुआमी - बखसंद तूं हरी। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 727)

अर्थः- हे नामदेव के स्वामी! तुम सब कुछ देनेवाले ही, तुम अन्तर्यामी हो और सबके काम देखने वाले हो। हे हरि! मैं तुम्हारा कौन-कौन सा गुण व्यक्त करूँ?

a. नाम तेरो आरती मजन मुरारे। हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 694)

अर्थः- हे प्रभु! मेरे लिए तुम्हारा नाम आरती है और (यही नाम) तीर्थ-स्नान है। परमात्मा के नाम-स्मरण के बिना सब आडम्बर मिथ्या हैं।

b. हरि नाम पिता - हरि नामो माता - हरि नाम सखाई मित्र हमारा। हरि नावै नाल गला - हरि नावै नाल मसलत - हरि नाम हमारी करदा नित सारा। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 592)

अर्थः- जिन मनुष्यों के हृदय में सदा हरि का नाम रहता है,परमात्मा हरि का नाम ही माँ-बाप है और नाम ही सखा और मित्र है। हरि के नाम द्वारा ही हमारी बातें तथा परामर्श हैं, नाम ही हमारी सुधि लेता

है, नाम ही हमारी प्यारी संगत है और नाम ही हमारा कुल तथा परिवार है ।

c. माई मै धन पाइओ हरि नाम । मन मेरो धावन ते छूटिओ कर बैठो बिसराम । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1186)

अर्थः- हे माँ ! मैंने परमात्मा का नाम-धन प्राप्त किया है, मेरा मन माया-विषयक भाग-दौड़ से बच गया है और (नाम-धन में) प्रवृत्त होकर बैठ गया है ।

d. नाउ मेरे खेती नाउ मेरे बारी। भगत करउ जन सरन तुम्हारी।

अर्थः- हरि-नाम ही मेरी खेती-बाड़ी है, हे प्रभु, यह सेवक तुम्हारी शरण में आकर तुम्हारी

नाउ मेरे माइआ नाउ मेरे पूंजी । तुमह छोड जानउ नही दूजी।

अर्थः- हरि-नाम मेरा धन है, हरि-नाम ही मेरी पूँजी है, मैं, ऐ प्रभु, तुम्हें छोड़ अन्य किसी दूसरे को नहीं पहचानता ।

नाउ मेरे बंधिप नाउ मेरे भाई । नाउ मेरे संग अंत होइ सखाई।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1157)

अर्थः- हरि-नाम मेरा सम्बन्धी है, हरि-नाम ही मेरा भाई है, हरि-नाम ही अन्त समय मेरा सहायक होता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

Related Satsang - "Rishte Naate" (114)

My True Friend and Relative

Human beings spend their lives searching for support, security, and companionship in family members, friends, and worldly relationships. Parents, siblings, relatives, and companions provide comfort and assistance, yet all worldly relationships are temporary and limited. The central message of this discourse is that the Divine alone is our eternal friend, relative, protector, and companion. Through Gurbani, we are reminded that God is not merely a distant Creator but our true Father, Mother, Brother, Friend, and Support in every circumstance of life. Human life is surrounded by countless worldly relationships such as parents, siblings, spouses, relatives, and friends. Although these relationships appear important and permanent, they are temporary and limited. The only eternal relationship is the bond between the soul and the Divine. Human birth is precious because it provides an opportunity for the soul to realize and unite with its true Beloved through the guidance of the Guru.

The soul is described as a bride, while Akal Purakh (the Eternal Divine) is her true Husband. Just as a marriage in the world requires a mediator, the union of the soul with God also requires a mediator, namely the Guru. The Guru connects the soul with the Divine through Naam and Shabad. All worldly relationships eventually end, but the relationship established through the Guru never breaks. Guru Sahib repeatedly reminds us that human life is short and easily wasted. Childhood passes in play, youth is spent chasing pleasures, wealth, property, and family attachments, and old age arrives before one realizes it.

By the time a person wishes to focus on spiritual life, physical strength and mental concentration have often weakened. Thus, the precious opportunity of human birth is lost in worldly concerns.

A central theme of the guru's discourse is that the soul possesses immense spiritual wealth, yet it squanders this treasure on worldly desires. An example is given of a wealthy person who becomes a beggar after spending all of his money. Similarly, the soul loses its spiritual strength by constantly investing its attention in material possessions, relationships, and ambitions. The mind continuously creates new desires, convincing the individual that happiness lies in external achievements, while true fulfilment remains hidden within. Another powerful example compares the soul to gold covered with layers of dirt. The dirt does not change the nature of the gold; it merely hides its shine. In the same way, the soul remains pure and divine, but layers of attachment, ego, lust, anger, greed, and worldly involvement conceal its true radiance. Spiritual practice removes these coverings and reveals the soul's original nature.

Guru Sahib also stresses the rarity of human birth. After wandering through countless life forms, the soul finally receives a human body, which is uniquely suited for spiritual awakening. However, instead of using wisdom to discover its true purpose, people often become trapped in endless projects, occupations, and worldly pursuits. The intellect that was meant to recognize the Divine becomes occupied with strengthening worldly bonds. Another memorable illustration is the dream-

house example. A person dreams of constructing a large house and carefully prepares the framework for its roof. Before the roof can be completed, the dream ends and the person wakes up. The framework built within the dream has no value in the waking world. Likewise, all achievements gained while spiritually asleep cannot help the soul attain the Divine. Awakening is essential; without awakening, spiritual realization remains impossible. Another striking example is that of a fly trapped in jaggery (sweet syrup). Drawn by sweetness, the fly becomes stuck and loses its freedom. In the same way, attachment to relationships and worldly pleasures traps the soul. What initially appears attractive eventually becomes a source of bondage, preventing spiritual progress.

Guru Sahib also explains that desires never truly end. A person who wants a car may later desire a bigger car. Someone who seeks wealth may then seek even greater wealth. Desire merely changes its form; it does not disappear. Therefore, peace is not achieved by fulfilling desires but by reducing attachment to them. This idea is reinforced through the teaching: "सेवा करत होत निहकामी तिसु कोउ होत परापति सुआमी ।" — selfless service and freedom from selfish desires lead one closer to the Divine. Guru Sahib does not advocate abandoning family responsibilities or running away from society. Instead, the message is to fulfil one's duties while understanding the temporary nature of worldly relationships. Family life should be lived responsibly, but without becoming completely absorbed in attachment and possessiveness. Guru ji further warns that death is certain. Parents, relatives, and loved ones eventually

depart, yet people continue to behave as though they themselves will live forever. The teachings remind us to remain aware of mortality and to use the present moment wisely. No worldly relationship accompanies the soul after death; only spiritual progress remains meaningful. Guru Ji also explains that the true Divine Word is not confined to any religion, language, or sect. The eternal spiritual reality exists within all beings. Religious divisions arise from human interpretations and attachments to external forms, while the true path lies in connecting the soul with the inner Divine Presence.

Hence guru sahib teaches those worldly relationships, possessions, and desires are temporary and cannot provide lasting fulfilment. Human birth is a rare opportunity granted to the soul for realizing its eternal relationship with Akal Purakh. Through the guidance of the Guru, the soul can awaken from spiritual sleep, overcome attachment and ego, and reconnect with its true source. The examples all illustrate the same truth: lasting peace is found not in worldly attachments but in union with the Divine. By recognizing the temporary nature of external relationships and cultivating love for Naam and Shabad, the soul can attain its true purpose and experience the eternal bond that never breaks. God alone is the soul's true friend, relative, protector, and companion. While worldly relationships have their place, they are temporary and subject to change. The Divine, however, remains constant and loving in every situation. Through the grace of the Guru and the remembrance of Naam, a person gains peace, spiritual wealth, and freedom from fear. Human beings are spiritually helpless without the support of the

Divine Name. Gurbani compares God's Name to a walking stick for a blind person. Just as a blind traveller depends upon a staff for guidance and protection, the soul depends upon Naam for direction in life. Without this support, a person easily becomes lost in worldly distractions. Divine Name is the soul's greatest treasure. The ultimate message is that lasting security and happiness are found not in worldly attachments but in recognizing and cultivating a living relationship with the Divine, who is our eternal Father, Mother, Friend, and Support.

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरु-सतगुरु-शब्द-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" जिसमें बहुत तीखा उच्च कोटि का आकर्षण विशेष उपलब्ध हैं जो पूरी सृष्टि को ही नहीं बांधता बल्कि आत्मा के संपर्क में आते ही चुंबक की तरह अपने आप में समेट लेता है इस को.....! इसके अलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

ऐक शब्द

साध संगत जी, यदि कुछ भी जरा सा भी कम रह गया अथवा बड़ गया है तो हम दोनों हाथ जोड़कर नतमतसक आपसे क्षमा प्रार्थी हैं । अतः कृपया क्षमा प्रदान करें और बख्शने की भी कृपालता करें - धन्यवाद ।

सृष्टि में सदा ही कोई एक विरला - दुर्लभ - मर्यादित - महाजीव विशेष विद्यमान होता ही है, अतः हम उस महा प्राणी को दोनों हाथ जोड़ नतमतसक सदा ही नमस्कार करते हैं ।

" No help is coming dear ! - so, you better start "

NOW - Help Yourself ?

एक ओंकार सतिगुरु प्रसादि
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
तपः तपै
नमौ नमः
मेरे साहिब जी
सतसंग
तूं मेरा पिता तूहै मेरा माता । तूं मेरा बंधप तूं मेरा भ्राता । तूं मेरा राखा सभनी थाई - ता भउ केहा काड़ा जीउ । मै अंधुले की टेक - तेरा नाम खुंदकारा । मै गरीब मै मसकीन - तेरा नाम है अधारा ।
Www.9009.co.in